2 जून 2012, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 5 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जून (प्रथम), 2012 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

46वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

● देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 1200 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित ●प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 16 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित ● शिविर में लगभग 25 विद्वानों का समाज को लाभ मिला ● बालबोध प्रशिक्षण में 500 एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 122 विद्यार्थी सम्मिलित हुये ● शिविर में लगभग डेढ लाख रुपयों का सत्साहित्य एवं लगभग 1 लाख 5 हजार घण्टों के सी.डी. व डी.वी.डी. प्रवचन घर-घर पहुँचे ।

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण प्रशिक्षण शिविर समिति, सागर द्वारा आयोजित 46 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर दिनाँक 13 से 30 मई, 2012 तक अनेक उपलब्धियों के साथ सानंद सम्पन्न हुआ ।

शिविर उद्घाटन के विस्तृत समाचार मई (द्वितीय) अंक में प्रकाशित किये जा चुके हैं ।

प्रात:कालीन प्रवचन – प्रतिदिन आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के बाद तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के ग्रन्थाधिराज समयसार के बंध अधिकार की प्रारंभिक गाथाओं पर मार्मिक प्रवचन हुये ।

रात्रिकालीन प्रवचन – प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के 'सात तत्त्वों का स्वरूप' के आधार से हुए द्वितीय प्रवचन के पूर्व प्रतिदिन क्रमश: पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, पण्डित कोमलचन्दजी टडा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, इंजी. अनिलजी इन्दौर, पण्डित कपूरचन्दजी भाईजी, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित निर्मलजी सिंघई के विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये ।

दोपहर की व्याख्यानमाला में – पण्डित सुनीलजी मामा, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित निखलेशजी दलपतपुर, पण्डित अंकुरजी जबेरा, पण्डित दीपेशजी अमरमऊ, पण्डित अरुणजी बड़ामलहरा, पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित अरविन्दजी सुजानगढ, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित मनीषजी सिद्धांत नागपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, पण्डित विजयजी बोरालकर, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित मनीषजी कहान खड़ैरी, पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद एवं पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री दलपतपुर के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए ।

प्रशिक्षण कक्षायें – बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल व पण्डित कोमलचंदजी टडा ने एवं शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर एवं पण्डित कोमलचंदजी टडा ने ली । प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली व पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने एवं शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री कोटा एवं पण्डित कोमलचन्दजी टडा द्वारा ली गई ।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में पण्डित अभयजी बदरवास, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित निखलेशजी दलपतपुर, पण्डित सन्मतिजी शास्त्री सागर, पण्डित अशोकजी इन्दौर, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित विजयजी बोरालकर, पण्डित सौरभजी शास्त्री कोटा, पण्डित मनीषजी सिद्धांत नागपुर, पण्डित अरविन्दजी सुजानगढ, पण्डित राजेन्द्रजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित शिखरचंदजी सागर, पण्डित सुनीलजी प्रतापगढ, विदुषी कमलाजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई, विदुषी रंजनाजी बंसल अमलाई, विदुषी लताबेन देवलाली, कु.प्रज्ञा जैन देवलाली एवं कु.परिणति पाटील जयपुर का सहयोग प्राप्त हुआ ।

प्रौढ़ कक्षायें – मोक्षमार्गप्रकाशक की कक्षा ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, **नयचक्र** की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं **गुणस्थान विवेचन** की कक्षा ब्र. यशपालजी जैन जयपुर ने ली ।

प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक जी-जागरण पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का लाभ मिला ।

बालवर्ग हेतु प्रतिदिन तीन समय कक्षाओं का आयोजन किया गया । इन कक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई के निर्देशन में प्रशिक्षणार्थी अध्यापकों द्वारा किया गया, जिसमें 200-250 बच्चे सम्मिलित हुये । प्रत्येक बालक ने बालबोध पाठमाला के तीनों भागों की परीक्षा दी एवं पण्डित आराध्य टडैया के निर्देशन में रात्रि में सांस्कृतिक

(शेष पृष्ठ 5 पर)

सम्पादकीय –

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

78 – पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १३५

प्रस्तुत गाथा में आस्रव पदार्थ का व्याख्यान करते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

रागो जस्स पसत्थो अणुकंपासंसिदो य परिणामो।
चित्तम्हि णत्थि कलुसं पुण्णं जीवस्स आसवदि।।१३५।।

(हरिगीत)

हो रागभाव प्रशस्त अर अनुकम्प हिय में है जिसे।
मन में नहीं हो कलुषता नित पुण्य आस्रव हो उसे।।१३५।।

जिस जीव को प्रशस्त राग है, अनुकंपा युक्त परिणाम हैं और चित्त में कलुषता का अभाव है, उस जीव को पुण्य का आस्रव होता है।

आचार्य श्री अमृतचन्द्र देव कहते हैं कि ''यह पुण्यास्रव के स्वरूप का कथन है। प्रशस्तराग, अनुकम्पा और चित्त की अकलुषता – ये तीनों शुभभाव द्रव्य पुण्यास्रव के निमित्तकारण रूप से कारणभूत हैं, इसलिए 'द्रव्यपुण्यास्रव' के प्रसंग का अनुसरण करके वे शुभभाव भावपुण्यास्रव हैं। तथा वे शुभभाव जिसके निमित्त हैं ऐसे पुद्गलों के शुभकर्म द्रव्य–पुण्यास्रव हैं।''

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

जिसकै राग प्रसस्त है, अनुकम्पा परिनाम।
चित्त कलुषता है नहीं, सो पुण्यास्रव धाम।।११०।।

(सवैया इकतीसा)

जीव के प्रशस्त राग अनुकंपा परिनाम,
चिन्तता कालुष नाहीं तीनौं शुभ भावना।
पुण्य रूप आस्रव कै बाहिर के कारण हैं,
तातैं भाव–पुण्य मुख्य आत्मीक पावना।।
ताही का निमित्त पाय, सुभ द्रव्य कर्म पुंज,
जोग द्वार आवै पुण्य आस्रव कहावना।
ऐसा भाव द्रव्य रूप आस्रव स्वरूप जानि,
आप रूप–न्यारा मानि आप माहिं आवना।।१११।।

(दोहा)

राग–दोष अरु मूढ़ता ये भावास्रव भेद।
पुद्गल पिण्ड समागमन दरवित आस्रव भेद।।११२।।

उपर्युक्त पद्यों में यह कहा है कि ''जीव के प्रशस्त राग, अनुकम्पा आदि के भाव शुभभाव हैं उनका निमित्त पाकर शुभ द्रव्यकर्मों का आस्रव योग द्वार से होता है। ऐसा भावास्रव एवं द्रव्यास्रव का स्वरूप है। राग–द्वेष व मोह – ये भावास्रव के भेद है, आत्मा इनसे न्यारा है।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी अपने व्याख्यान में कहते हैं कि ''जीव को जो देव–शास्त्र–गुरु के प्रति प्रीति भाव आता है, वह पुण्यास्रव का कारण है। जीवों पर दया का भाव भी पुण्यास्रव का कारण है। यहाँ भावास्रव को पहले कहा है तथा पीछे द्रव्यास्रव होने की बात की, परन्तु दोनों में समय भेद नहीं बताना है, बल्कि भावास्रव, द्रव्यास्रव का कारण है – ऐसा कारणपना बताने के लिए ही यहाँ भावास्रव को पहले कहा है।

दूसरी बात – परिणामों में कलुषता नहीं हुई, मंदकषायरूप सरल परिणाम रहे, इसलिए भी पुण्यास्रव है। चित्त की प्रसन्नता का शुभ परिणाम भी पुण्य आस्रव है। जीव के ये परिणाम भावास्रव हैं तथा इनके निमित्त से पुण्य–पाप के जो जड़ रजकण बंधते हैं, वे द्रव्यास्रव हैं।'' ●

गाथा – १३६

अब प्रस्तुत गाथा में प्रशस्त राग का स्वरूप कहते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

अरहंतसिद्धसाहूसु भत्ती धम्मम्मि जा य खलु चेट्ठा।
अणुगमणं पि गुरूणं पसत्थरागो त्ति वुच्चंति।।१३६।।

(हरिगीत)

अरहंत सिद्ध अर साधु भक्ति गुरु प्रति अनुगमन जो।
वह राग कहलाता प्रशस्त जँह धरम का आचरण हो।।१३५।।

अरहंत, सिद्ध, साधुओं के प्रति भक्ति, धर्म में यथार्थ चेष्टा और गुरुओं का अनुगमन प्रशस्त राग कहलाता है।

आचार्य श्री अमृतचन्ददेव टीका में कहते हैं कि अरहंतसिद्ध व साधुओं के प्रति भक्ति, व्यवहार धर्म में शुभ आचरण तथा आचार्य आदि गुरुओं का अनुसरण करना प्रशस्त राग है; क्योंकि इनका फल प्रशस्त है।

यह प्रशस्त राग वास्तव में स्थूल लक्ष वाला होने से मात्र भक्ति प्रधान है जिनके, मुख्यतया ऐसे अज्ञानी जीवों के होता है। उच्च भूमिका में अर्थात् ऊपर के गुणस्थानों में न पहुँचे तब अयोग्य स्थान को राग नहीं हो, एतदर्थ कदाचित ज्ञानियों को भी होता है।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य की भाषा में कहते हैं –

(सवैया इकतीसा)

पूजै अरहंत सिद्ध आचारिज उपाध्याय,
साधु पंच परमेष्ठी विषै भक्ति करनी।
धर्म विवहाररूप चारित आचारज रूप,
वस्तु–धर्म–साधन मैं प्रीति रीति धरनी।।
पंचाचारी गुरुहूँ की उपासना सदाकाल,
एई तीनौं मिथ्यारीति मोख की कतरनी।
ग्यानी कै सरूप धरै तीव्रराग नास करै,
एई तीनौ क्रियारूप मोख की वितरनी।।११४।।

गुरुदेव श्री कानजीस्वामी अपने व्याख्यान में कहते हैं कि अरिहंत, सिद्ध तथा मुनियों के प्रति भक्तिभाव होना, उनके प्रति

आदर–बहुमान हो, वह प्रशस्त राग है।

यहाँ सच्चे देव–शास्त्र–गुरु की बात है, सच्चे–देव–गुरु के प्रति भक्ति का भाव पुण्यास्रव है।

सम्यग्दृष्टि धर्मात्माओं को वीतराग भगवान की भक्ति का भाव आता है। वीतराग प्रतिमाजी के दर्शन का भाव आता है। सच्चे देव–शास्त्र–गुरु के प्रति भक्ति का भाव आये नहीं रहता, परन्तु जो ऐसे शुभराग को धर्म माने तो वह जीव राग को व धर्म के अन्तर नहीं समझता। धर्मी को अपनी राग की भूमिका में देव गुरु की पूजा–भक्ति प्रभावना वगैरह का भाव होता ही है; किन्तु उसे वह आश्रव ही समझता है। परजीवों को बचाने का भाव पाप नहीं है, बल्कि पुण्य है; परन्तु ''मैं पर जीव को मार सकता हूँ या बचा सकता हूँ'' – ऐसी मान्यता मिथ्यात्व है। ध्यान रहे, मिथ्यादृष्टि जीवों को भी जो दया का भाव आता है, वह भी पुण्यास्रव है।

अज्ञानी को पंचपरमेष्ठी के प्रति भक्ति का भाव आता है; किन्तु वह अन्तर से यथार्थपने पंचपरमेष्ठी को पहचाने तो अन्तर आत्मा का भान हुए बिना नहीं रहता, होता ही है; क्योंकि परमेष्ठी भी तो आत्मा ही हैं। यदि उनके शुद्ध आत्मा को पहचाने तो अपना आत्मा भी उन्हीं जैसा है। इस तरह वह अपने आत्मा को पहचान लेता है और उसे सम्यग्दर्शन व सम्यग्ज्ञान हुए बिना नहीं रहता। वह सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लेता है।

अज्ञानी को भी पंचपरमेष्ठी की भक्ति करने से मिथ्यात्व सहित शुभभाव होता है। देह की क्रिया आस्रव नहीं है, बल्कि जीव के जो शुभाशुभ परिणाम हुए, वह भावास्रव है।''

इसप्रकार पुण्यास्रव का व्याख्यान हुआ। ●

गाथा – १३७

विगत गाथा में प्रशस्त राग के स्वरूप का कथन किया।

अब प्रस्तुत गाथा में अनुकम्पा के स्वरूप का कथन है।

मूल गाथा इसप्रकार है –

तिसिदं व भुक्खिदं वा दुहिदं दट्ठुण जो दु दुहिदमणो।
पडिवज्जदि तं किवया तस्सेसा होदि अणुकंपा।।१३७।।

(हरिगीत)

क्षुधा तृषा से दुःखीजन को व्यथित होता देखकर।
जो दुःख मन में उपजता करुणा कहा उस दुःख को।।१३७।।

तृषातुर, क्षुधातुर दुःखी को देखकर जो जीव मन में दुःख पाता है, करुणा से द्रवित होता है, उसका वह भाव – अनुकम्पा है।

आचार्य श्री अमृतचन्द कहते हैं कि ''किसी तृषादि दुःख से पीड़ित प्राणी को देखकर करुणा के कारण उसका प्रतिकार करने की इच्छा से चित्त में आकुलता होना अज्ञानी की अनुकम्पा है। ज्ञानी की अनुकम्पा तो निचली भूमिका में रहते हुए जन्म–मरण रूप संसार सागर में डूबते–उतराते हुए जगत को देखकर हृदय में दुःख होना करुणा है।''

कवि हीरानन्दजी काव्य की भाषा में कहते हैं –

(दोहा)

तृतितबुभुच्छित दुखित कौं देखि दुखित जो होइ।
प्रतीकार करुणा करै, तस अनुकम्पा जोइ।।११६।।

(सवैया इकतीसा)

तृषा सौं तृषित भारी भूख सौं बुभुच्छा धारी,
दुःख सौं दुखित देह सारी विकराल है।
ऐसा नरनारी रूप रोग–कूप–बूढ़ा देखि,
हा हा कै अज्ञानी जीव आकुल बेहाल है।
ज्ञानी अनुकम्पा करै आकुलता–भाव हरै,
कर्म का विपाक जानै उद्यम विसाल है।।
अजय है अज्ञानी भवकूप का निदानी सदा,
मोख की निसानी ग्यानी ग्यान मैं त्रिकाल है।।११७।।

(दोहा)

दुखित जीव दुःख देख कै, जो दुख करिहै दूर।
अनुकम्पा परिनाम सो करुणा रस भरपूर।।११८।।

कवि कहते हैं कि प्यासे, भूखे प्राणी को देखकर दुखी होना अनुकम्पा है। नर–नारियों को रोगों एवं बुढ़ापे से दुःखी देखकर अज्ञानी व्याकुल होते हैं। ज्ञानियों को उन्हें देख दया तो आती है; परन्तु देवत्व के सहारे उनके पापोदय का फल जानकर समता रखते हैं तथा उनके दुःख को यथासंभव दूर करने का प्रयास करते हैं।

गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी व्याख्यान में कहते हैं कि जो कोई तृषावंत है, भूखा है अथवा रोगादि से दुःखी है, उसे देखकर जो पुरुष उनकी पीड़ा से स्वयं दुःखी होकर दयाभाव करता है तथा उस पुरुष के दुःख को दूर करने के परिणाम करता है, उसे दया कहते हैं। वह दया का भाव पुण्यास्रव हैं।

यह दया का भाव ज्ञानी व अज्ञानी दोनों को होता है, परन्तु इतना विशेष है कि अज्ञानी को जो दुखियों को देखकर दयाभाव होता है, उसके दुःख को दूर करने के उपाय में वह अहं बुद्धि करके आकुलता करता है ''मैं उसके दुःख को दूर कर सकता हूँ'' – ऐसे अभिप्राय के कारण वह मिथ्यादृष्टि है, उसे मिथ्या मान्यता का बहुत पाप बंध होता है, किन्तु जितना कोमलता का भाव होता है, उस अनुपात में उसे पुण्य बंध भी होता है।

ज्ञानी अपने आत्मा को जानते हुए परपदार्थों की अवस्था को यथार्थ जान लेता है कि करुणा का पात्र जीव क्षुधा–तृषा के कारण दुःखी नहीं है; परन्तु वह अपने अज्ञानता के कारण दुःखी है; किन्तु ज्ञानी को अपनी पुरुषार्थ की कमजोरी से जो दया का भाव होता है, उससे उसे पुण्यबंध होता है, धर्म नहीं होता। ●

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन द्वारा हाड़ौती व मालवा प्रान्त के 61 स्थानों पर दिनांक 25 से 31 मई तक वृहद् आध्यात्मिक शिक्षण समर केम्प का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित शान्तिलालजी सोगानी महिदपुर, पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पंडित जयकुमारजी बारां, पंडित तेजकुमारजी गंगवाल इंदौर, पंडित मोहनलालजी राठौड़ केशवरायपाटन, पंडित चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा आदि विद्वानों का लाभ मिला।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, श्री आदिनाथ विद्या निकेतन मंगलायतन अलीगढ, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा, श्री धरसेनाचार्य दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा एवं उज्जैन के युवा विद्वानों सहित कुल 75 विद्वानों द्वारा जैनधर्म के संस्कारों का बीजारोपण किया गया।

61 स्थानों पर एक साथ आयोजित इस सामूहिक शिक्षण शिविर में लगभग –– हजार साधर्मियों ने जैनत्व के संस्कारों को ग्रहण किया।

शिविर में हाड़ौती व मालवा प्रान्त के झालावाड़, बारां, कोटा, बून्दी, भीलवाड़ा, मंदसौर, शाजापुर व उज्जैन जिले के विभिन्न नगरों में मनोवैज्ञानिक पद्धति द्वारा बच्चों को नैतिक व जैन सिद्धान्तों का प्राथमिक ज्ञान कराया गया।

शिविर में श्री प्रेमचंदजी बजाज मुमुक्षु आश्रम कोटा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

शिविर का उद्घाटन दिनांक 25 मई को श्री सीमंधर दिगम्बर जैन मंदिर क्षीरसागर उज्जैन (म.प्र.) एवं सामूहिक समापन समारोह दिनांक 31 मई को श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय मन्दिर खण्डपुरा, पिड़ावा–झालावाड़ (राज.) में किया गया।

शिविर के **निर्देशक** ब्र. समता जैन उज्जैन, **सह निर्देशक** श्री मुक्तेशजी जैन पिड़ावा, **संयोजक** पण्डित आशीषजी शास्त्री टोंक व पण्डित आशीषजी शास्त्री सिलवानी, **सहसंयोजक** श्री सुकमालजी जैन (प्रेस) पिड़ावा व श्री राकेशजी प्रेमी पिड़ावा एवं **सूत्रधार** श्री अरहंतप्रकाश झांझरी उज्जैन थे। शिविर में के.के.पी.पी.एस. के अध्यक्ष पण्डित प्रदीपजी झांझरी व महामंत्री पण्डित नागेशजी पिड़ावा का आयोजकत्व उल्लेखनीय रहा।

श्रुतपंचमी पर्व संपन्न

खतौली (उ.प्र.) : यहाँ श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर दिनांक 26 मई को नवलब्धि विधान का आयोजन किया गया। मंगल कलश विराजमानकर्ता श्री प्रवीणकुमारजी जैन महलका परिवार एवं ध्वजारोहणकर्ता श्री नरेन्द्रकुमारजी सर्राफ खतौली थे।

इस अवसर पर पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली एवं पण्डित नेमचंदजी शास्त्री खतौली के प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रात: विधान के पश्चात् जिनवाणी को वस्त्र भेंट किया एवं नगर के समस्त जिनमंदिरों में जिनवाणी की पालकी यात्रा निकाली गई। इस अवसर पर लगभग 300–400 लोगों ने धर्मलाभ लिया। विधि–विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित सुमितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा द्वारा संपन्न हुये। **– कल्पेन्द्र जैन**

श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का –

चतुर्थ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

सागर (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 27 मई को श्री टोडरमल स्नातक परिषद् का चतुर्थ अधिवेशन संपन्न हुआ।

अधिवेशन की अध्यक्षता परिषद् के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री डॉ. जीवनलालजी जैन सागर, श्रीमंत सेठ सुरेशजी जैन सागर एवं श्री संतोषजी गढीवाले उपस्थित थे। विद्वत्वर्ग में तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर आदि मंचासीन थे।

परिषद के महामंत्री पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने स्नातक परिषद् की स्थापना और कार्य की जानकारी दी एवं आगामी गतिविधियों की जानकारी देते हुए जुलाई माह में जयपुर में लगने वाले शिक्षण शिविर में क्रमबद्धपर्याय पर निबन्धात्मक गोष्ठी के आयोजन की घोषणा की।

स्नातक परिषद के मार्गदर्शक तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने स्नातक परिषद को समाज का भविष्य बताते हुए कहा कि यह परिषद समस्त शास्त्री विद्वानों का पवित्र संगठन है। इसके द्वारा ही समाज को धर्म की दशा व दिशा प्राप्त होगी।

इस अवसर पर उपस्थित सभी सदस्यों ने स्वयं का एवं स्वयं के द्वारा किये जा रहे तत्त्वप्रचार के कार्यों का परिचय देते हुये परिषद की गतिविधियों को आगे बढाने के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये। इसके पश्चात् अध्यक्ष महोदय ने भी अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए डॉ. भारिल्ल के मार्गदर्शन को संस्था की नींव का पत्थर बताया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर ने एवं संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने किया।

हार्दिक बधाई !

लाडनूँ (राज.) निवासी चि. वीरचंदजी शास्त्री का शुभ विवाह फिरोजाबाद (उ.प्र.) निवासी सौ. रीना जैन के साथ दिनांक 30 अप्रैल को सम्पन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में 101/– रुपये की राशि प्राप्त हुई।

टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

हार्दिक आमंत्रण

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा प्रतिवर्ष ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में लगने वाला आध्यात्मिक शिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 22 जुलाई से 31 जुलाई, 2012 तक आयोजित होने जा रहा है। आप सभी को पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

कृपया अपने पधारने की पूर्व सूचना अवश्य देवें; ताकि आपके आवास आदि की व्यवस्था समुचित रूप से हो सके।

Anekant Education Society's

Anekant Institute of Management Studies (AIMS)

(Approved by AICTE & Affiliated to University of Pune)

Baramati 413 102, Dist. Pune (Maharashtra)

Jain Minority Institution

Phone No. : 02112-227299, **Fax:** 02112-227299, **Website:** www.aimsbaramati.org
E-mail: director.aimsbaramati@gmail.com

MBA Admission Opportunity for Jain Candidates

For the academic year 2012-13 MBA seats are available for Jain candidates.

Scholarships available to Jain Candidates.

Director
Anekant Institute of Management Studies, Baramati

Secretary
Anekant Education Society, Baramati

(पृष्ठ 1 का शेष...)

कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 26 मई को श्रुतपंचमी के अवसर पर प्रात: विशाल शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें सभी साधर्मी भाई–बहनों ने बहुत उत्साह के साथ भाग लिया। इसके पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के विशेष व्याख्यान का लाभ भी मिला। पालकी को सर्वप्रथम उठाने की बोली श्री जयकुमारजी जैन सागर व श्री वी.एस. जैन द्वारा ली गई। शास्त्र विराजमान करने की बोली श्री वैभवजी मोदी दलपतपुर द्वारा ली गई।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन – दिनांक 29 मई को प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न हुआ। इस अवसर पर अध्यक्षता श्री विनोदजी गौरझामर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में इंजी. नेमीचंदजी मंचासीन थे। मुख्य वक्ता के रूप में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं अन्य विद्वानों में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित अभयजी बदरवास, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित कोमलचंदजी टडा, पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित राकेशजी लिधौरा, पण्डित निखलेशजी दलपतपुर, पण्डित सन्मतिजी मोदी, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित धमेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित सौरभजी कोटा, पण्डित सोनूजी शास्त्री फिरोजाबाद, विदुषी कमला भारिल्ल, विदुषी लताबेन, विदुषी रंजना बंसल अमलाई, विदुषी स्वर्णलता जैन नागपुर, कु. प्रज्ञा जैन देवलाली, कु. परिणति पाटील जयपुर एवं कु. प्रतीति पाटील जयपुर उपस्थित थे।

कार्यक्रम में सभी प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिदिन पाठशाला चलाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम का संचालन श्री ऋषभजी जैन मौ एवं शुचि जैन सागर ने किया।

दीक्षांत समारोह के समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

डॉ. भारिल्ल का 78वाँ जन्मदिवस –

संकल्प दिवस के रूप में मनाया

सागर (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 13 से 30 मई तक होने वाले श्री वीतराग–विज्ञान शिक्षण प्रशिक्षण शिविर में दिनांक 25 मई को सायंकाल डॉ. भारिल्ल का 78वाँ जन्मदिवस संकल्प दिवस के रूप में मनाया गया।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने लगभग 142 लोगों को शपथ ग्रहण करवाई। सागर मुमुक्षु मण्डल के सभी ट्रस्टियों द्वारा श्रीफल भेंटकर, माल्यार्पणकर व शास्त्र भेंटकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया गया। जिस संकल्प को सभी लोगों ने ग्रहण किया, वह इसप्रकार है –

''हम अपने गुरु डॉ हुकमचन्दजी भारिल्ल के 75वें जन्मदिवस (हीरक जयन्ती) के अवसर पर उनके समक्ष देव–शास्त्र–गुरु की साक्षीपूर्वक भगवान महावीर आदि तीर्थंकरों की दिव्यध्वनि में उपदिष्ट कुन्दकुन्दादि आचार्यों, टोडरमलजी आदि विद्वानों एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी द्वारा प्रदर्शित वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार का आजीवन संकल्प लेते हैं। हम सदैव तत्त्वज्ञान के प्रचार प्रसार हेतु प्रयत्नशील रहेंगे।''

कार्यक्रम में श्री ऋषभजी समैया एवं पाठशाला के बच्चों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया।

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का 95

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

दूसरा प्रवचन

संतप्त मानस शांत हों, जिनके गुणों के गान में।
वे वर्द्धमान महान जिन, विचरें हमारे ध्यान में।।

पण्डितों के पण्डित आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी कृत रहस्यपूर्णचिट्ठी पर चर्चा चल रही है।

पण्डितजी ने जिन भाइयों के नाम यह पत्र लिखा था, उनके लिए उन्होंने **अध्यात्मरसरोचक** विशेषण से संबोधित किया है। उनके पत्र में जो प्रश्न पूछे गये थे, उनके आधार पर पण्डितजी इस बात को समझ गये थे कि वे लोग अध्यात्म के रसिक हैं, अध्यात्म के अध्ययन से रुचि रखनेवाले हैं।

अध्यात्म की रुचि रखनेवालों के प्रति उनके हृदय में कितना और कैसा वात्सल्यभाव था; यह उनके निम्नांकित कथन में उपलब्ध होताहै–

''सो भाईजी, ऐसे प्रश्न तुम सरीखे ही लिखें। इस वर्तमानकाल में अध्यात्मरस के रसिक बहुत थोड़े हैं। धन्य हैं जो स्वात्मानुभव की बात भी करते हैं।''

अध्यात्मसंबंधी चर्चा करनेवालों की दुर्लभता पण्डित टोडरमलजी के समय में भी थी और आज भी है।

यहाँ कोई कह सकता है कि आज तो आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के प्रताप से अध्यात्मरस की चर्चा करनेवालों की कोई कमी नहीं है, आज तो गाँव–गाँव में अध्यात्मप्रेमी प्राप्त होते हैं, घर–घर में अध्यात्म की चर्चा चलती है।

अरे, भाई ! ऐसे तो टोडरमलजी के जमाने में भी जयपुर में अध्यात्म–प्रेमियों की कमी नहीं थी और गाँव–गाँव में शास्त्रसभायें भी चलती थीं। मुलतान से प्राप्त पत्र से ही यह सबकुछ स्पष्ट है; तथापि पूरे भारत वर्ष के अनुपात में तो अत्यल्प ही हैं।

पण्डितजी का वात्सल्यभाव तो देखो, वे आत्मानुभव की बात करनेवालों को भी धन्य मानते हैं, धन्यवाद देते हैं।

वे अपनी बात की पुष्टि में जो प्रमाण प्रस्तुत करते हैं; वह प्रमाण तो इससे भी आगे हैं; क्योंकि उसमें तो बात करनेवालों को ही नहीं, प्रीतिपूर्वक आत्मा की बात सुननेवालों को भी अल्पकाल में मोक्ष जानेवाला बताया गया है। तात्पर्य यह है कि **जब सुननेवाले भी निकटभव्य होते हैं तो बात करनेवाले और आत्मानुभूति करनेवालों का तो कहना ही क्या है ?**

इसप्रकार हम देखते हैं कि पण्डित टोडरमलजी ने मुलतानवाले तत्त्वप्रेमी साधर्मी भाइयों को **अध्यात्मरसरोचक** विशेषण देकर उनके प्रति न केवल अपना सद्भाव प्रगट किया है, अपितु अपनी परिपुष्ट अध्यात्मरुचि का परिचय भी दे दिया है।

आचार्य अमृतचन्द्र समयसार परमागम की आत्मख्याति टीका पूरी करते हुए जो अन्तिम छन्द लिखते हैं, उसमें स्वयं तो **स्वरूपगुप्त अमृतचन्द्र सूरि** लिखते हैं। यह भी लिखते हैं कि इस आत्मख्याति टीका लिखने में स्वरूपगुप्त अमृतचन्द्र का कुछ भी कर्त्तव्य नहीं है। तात्पर्य यह है कि स्वरूपगुप्त अमृतचन्द्र ने इसमें कुछ भी नहीं किया है।

आचार्य अमृतचन्द्र के अनुसार उनके दो रूप हैं। प्रथम तो वह जो निरन्तर आत्मा में गुप्त रहना चाहता है, रहता है और दूसरा वह जो प्रवचन करते थे, शिष्यों को पढ़ाते थे, शास्त्र लिखते थे। पहला है स्वरूप में गुप्त शुद्धोपयोगी अमृतचन्द्र का और दूसरा है पठन–पाठन करनेवाले शुभोपयोगी अमृतचन्द्र का।

आचार्यश्री कहते हैं कि मेरा अपनापन स्वरूपगुप्त अमृतचन्द्र में है। इसलिए मैं कहता हूँ कि यह लिखने–पढ़ने का काम स्वरूपगुप्त अमृतचन्द्र का नहीं है।

प्रश्न : यदि अमृतचन्द्र ने टीका नहीं की तो फिर उस टीका की प्रामाणिकता का क्या होगा ?

उत्तर : अरे, भाई ! स्वरूपगुप्त अमृतचन्द्र ने नहीं बनाई, पर टीकाकरने के विकल्पवाले आचार्य अमृतचन्द्र तो व्यवहार से टीका के कर्ता हैं ही।

तीन कषाय के अभावरूप शुद्धि तो दोनों अमृतचन्द्रों में है; अत: सच्ची मुनिदशा भी दोनों के ही विद्यमान है। अत: टीका की प्रामाणिकता में सन्देह के लिए कोई स्थान नहीं है।

आजकल जगत की स्थिति तो ऐसी है कि पत्रों में सब दुनियादारी की ही बातें लिखते हैं। समाज के झगड़े, राजनीति के झगड़े, गाँव के झगड़े, घर की समस्यायें, बीमारियों की चर्चा – यही सबकुछ होता है आज के पत्रों में।

अरे, भाई ! संसार तो दु:खों का घर है; इसमें जीवों को संयोग–वियोग, अनुकूलता–प्रतिकूलता तो लगी ही रहती है। जगत इस स्थिति के बीच यदि कोई आत्मानुभव संबंधी बात लिखता है तो वह नियम से विशिष्ट व्यक्ति है, धर्मात्मा है, साधर्मी है; उसके प्रति ज्ञानीजनों को वात्सल्यभाव का उमड़ना स्वाभाविक ही है।

इस संसार में अध्यात्म की चर्चा करनेवाले तो सदा ही कम रहनेवाले हैं। ६ महीना ८ समय में जब ६०८ जीवों को ही मोक्ष में जाना है तो मोक्षमार्ग के पथिक असीमित कैसे हो सकते हैं ? अत: आत्मार्थियों की संख्या कम देखकर चित्त को आंदोलित करने की आवश्यकता नहीं है; परन्तु यह भी तो सहज ही है कि ज्ञानीजनों को इसप्रकार की चर्चा करनेवालों को देखकर प्रसन्नता होती ही है।

जौहरियों की दुकान पर भीड़ नहीं रहती। वहाँ तो गिने–चुने ग्राहक ही आते हैं। इसीप्रकार अध्यात्म की चर्चा करनेवाले तो थोड़े ही होते हैं।

दशलक्षण महापर्व के अवसर पर जब हमारे छात्र नगर–नगर मेंगाँव–गाँव में प्रवचनार्थ जाते हैं तो मार्गदर्शन देते हुए मैं कहता हूँ कि यदि कहीं श्रोताओं की संख्या कम मिले तो अपने चित्त को आंदोलित

नहीं करना।

टोडरमल स्मारक भवन के प्रवचन मण्डप में, जहाँ मैं प्रवचन करने बैठता हूँ; उसकी दाहिनी ओर दीवाल पर एक चित्र लगा है; जिसमें दिखाया गया है कि हिरण को मारकर खाते हुए शेर को दो चारण ऋद्धिधारी मुनिराज उपदेश दे रहे हैं।

उस चित्र को दिखाते हुए मैं कहता हूँ कि देखो यह सभा, इसमें एक श्रोता है और वह भी मनुष्य नहीं, पशु शेर और वक्ता हैं दो, वे भी महान सन्त मुनिराज। जरा सोचो कैसी होगी वह सभा ?

हजारों की संख्यावाली हमारी सभा अच्छी है या वह, जिसमें श्रोता तो एक था, पर वह अपना कल्याण करने में सफल हुआ। हमारी हजारों श्रोताओंवाली सभा में से एक भी नहीं सीझता।

आज सन्तों की सार्वजनिक सभाओं में दस–दस हजार की भीड़ रहती है, पर उनमें कितने लोग जैनधर्म को स्वीकार करते हैं ?

मनोरंजन के लिए सुनने को आना अलग बात है और आत्मकल्याण की भावना से भगवान महावीर का मूल तत्त्वज्ञान समझने की भावना से सुनना अलग बात है।

छात्रों में से कोई कहता है कि श्रोता तो थे, पर अच्छे लोग नहीं थे, पगड़ी–साफावाले थे, रात में खानेवाले थे, जमींकंद भी खाते थे – ऐसे लोगों को हम क्या सुनाते ?

उन्हें समझाते हुए हम कहते हैं कि शेर जैसे क्रूर मांसाहारी तो नहीं थे। तात्पर्य यह है कि मुनिराजों ने तत्त्व की बात समझाने के पहले शेर पर कोई शर्तें नहीं लादी थीं। जिस स्थिति में शेर था, उसी स्थिति में सदुपदेश दिया था। कभी–कभी मुझे विकल्प आता है कि मुनिराजों को उपदेश देने के पहिले इतना तो कहना ही था कि जावो कुल्ला करके आओ, फिर हम कुछ समझायेंगे।

पहिले से ही शर्तें लगाने से हो सकता है कि कोई आपकी बात सुने ही नहीं। अरे, भाई ! सदाचारी बनाने के लिए भी तो समझाने का काम करना होगा। **बिना समझाये हम किसी को सदाचारी भी कैसे बना सकते हैं ? कुल्ला करके आओ – यह भी तो सुनाना ही है, सदुपदेश ही है।**

मुझसे लोग कहते हैं कि आप आत्मा की ऊँची–ऊँची बातें करते हैं; पर आपको पता है कि आपके सामने सिर हिलानेवाले इन श्रोताओं का आचरण कैसा है ? आप क्या जानें इन्हें ? इन्हें तो हम जानते हैं कि ये क्या–क्या करते हैं ?

अरे, भाई ! हमें जानना भी नहीं है; क्योंकि जानकर भी हम क्या करेंगे ? किसी को प्रवचन सुनने से तो रोक नहीं सकते। हमारे पास ऐसा क्या उपाय है कि एक–एक श्रोता की जाँच कर सकें। जब हम हवाईजहाज से यात्रा करते हैं तो वहाँ सुरक्षा के लिए कुछ मशीनें लगी रहती हैं, जिनमें से हमें गुजरना पड़ता है। उनके द्वारा यह पता लग जाता है कि हमारे पास कोई खतरनाक हथियार तो नहीं है।

अब आप ही बताइये कि हमारे पास ऐसा कौनसा साधन है कि जिसके माध्यम से हम यह पता लगा सकें कि आप दुराचारी तो नहीं हैं?

तीर्थंकरों की धर्मसभा (समोशरण) में मनुष्य और देवताओं के साथ शाकाहारी–मांसाहारी सभी पशु–पक्षी भी जाते थे तो हम अपनी सार्वजनिक सभा में किसी को आने से कैसे रोक सकते हैं, हमारे पास रोकने का साधन भी क्या है ?

इसप्रकार की रोक तीर्थंकरों ने नहीं लगाई, सन्तों ने नहीं लगाई; लगाई होती तो भगवान महावीर बननेवाला शेर भी सदुपदेश से वंचित हो सकता था। आप ही बताओ इस संदर्भ में हम क्या कर सकते हैं ?

जब मैं यह कहता हूँ तो लोग कहते हैं कि तुम क्या चाहते हो; लोग माँस–मदिरा का सेवन करते रहें और तुम्हारा उपदेश सुनते रहें ?

अरे, भाई ! हम ऐसा क्यों चाहेंगे ? मुनिराजों का उपदेश सुनने के बाद उस शेर ने पूर्ण जिन्दगी माँस–मदिरा का सेवन नहीं किया।

यदि उसे इसकारण नहीं सुनाते, नहीं समझाते; तो यह दिन भी कैसे आता ? उस शेर ने जीवनभर माँसभक्षण तो किया ही नहीं, अनछना पानी भी नहीं पिया।

क्या बात करते हो, उसके पास छन्ना तो था नहीं, लोटा भी नहीं था; फिर पानी कैसे छानता होगा वह ?

शास्त्रों में लिखा है कि जहाँ झरना हो, ऊपर से पानी गिर रहा हो तो वह पानी प्रासुक हो जाता, छना हुआ मान लिया जाता है। उक्त पानी को वह पीता था, न मिले तो प्यासा ही रह जाता था।

कठिनाई की बात तो यह है कि माँसाहारियों की आंतें और दाँत ऐसे नहीं होते कि वे घास खा सकें और उन्हें हलुआ–पुड़ी कोई खिलाने से रहा। ऐसी स्थिति में उसे शेष जीवन निराहार ही बिताना होगा।

जीवन–मौत की कीमत पर उस शेर ने यह सबकुछ किया। जरा सोचिये तो सही उसका शेष जीवन कैसा रहा होगा?

इस पर आप कह सकते हैं कि क्या श्रोता मांसभक्षी भी हो सकते हैं?

नहीं, भाई ! हम तो यह कह रहे हैं कि प्रवचनों में आने से तो किसी पर प्रतिबंध लगाना संभव नहीं है। यह बात तो मात्र प्राथमिक श्रोता की है। श्रोता तो गणधरदेव भी हैं। श्रोता कैसा होना चाहिए – यह जानने के लिए मोक्षमार्गप्रकाशक के प्रथम अधिकार में समागत वक्ता–श्रोता संबंधी प्रकरण का गहराई से स्वाध्याय किया जाना चाहिए।

मैं तो यह कह रहा था कि धर्मोपदेश देने में श्रोताओं की संख्या का विचार नहीं करना। भीड़ नहीं, पात्रता देखना चाहिए। पात्रता का अर्थ क्षयोपशम और विशुद्धिलब्धि से सम्पन्न होना है।

इस पर कोई कह सकता है कि हिरण को मारकर खा रहे शेर में मुनिराजों ने क्या पात्रता देखी थी ?

अरे, भाई ! एक तो वे मुनिराज उस शेर के भूत और भविष्य के बारे में बहुत कुछ जानते थे; दूसरे वह शेर उक्त **मुनिराजों की ओर जिज्ञासा भाव से मेढ़े की भाँति टकटकी लगाकर देख रहा था। इससे उन मुनिराजों को उसकी पात्रता ख्याल में आ गई।**

कोई व्यक्ति आत्मा की चर्चा को कितनी रुचिपूर्वक सुन रहा है, कितने ध्यान से सुन रहा है – यह बात उसकी आँखों से पता चल जाती है। (क्रमशः)

2 जून 2012, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेनशन का –

अधिवेशन संपन्न

सागर (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 13 से 30 मई तक होने वाले श्री वीतराग-विज्ञान शिक्षण प्रशिक्षण शिविर में शनिवार, दिनांक 26 मई को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन संपन्न हुआ।

इस अधिवेशन की अध्यक्षता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। मुख्य अतिथि श्री चक्रेशकुमार-राजेशजी जैन अशोकनगर एवं विशिष्ट अतिथि श्री विकासजी मोदी मकरोनिया सागर थे।

इस अवसर पर विद्वानों के अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर, श्री अरुणजी मोदी, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित रमेशजी मंगल, श्री राजेन्द्रजी बंसल अमलाई; राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों के अन्तर्गत पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, श्री रतनचंदजी जैन कोटा, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर एवं शिविर की आयोजन समिति के सदस्यों के अन्तर्गत सेठ गुलाबचंदजी जैन सुभाष ट्रांसपोर्ट सागर (कार्याध्यक्ष), श्री आदित्यजी जैन लाल दुकान सागर (महामंत्री), श्री प्रमोदजी जैन, एल.आई.सी. सागर (संयोजक) एवं श्री सुनीलकुमारजी सर्राफ सागर (स्वागताध्यक्ष) आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम पाठशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण किया गया, तत्पश्चात् सभी महानुभावों का स्वागत इंजीनियर सुनीलजी जैन, श्री मनोजजी बुंदेला ने किया। स्वागत भाषण श्री विकासजी मकरोनिया सागर ने किया एवं सागर फैडरेशन की शाखा की गतिविधियों की जानकारी दी। नागपुर शाखा की गतिविधियों की जानकारी पण्डित मनीषजी सिद्धांत नागपुर ने, खड़ैरी शाखा की जानकारी पण्डित राजेन्द्रजी शास्त्री खड़ैरी ने, राजस्थान प्रांत की जानकारी पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा ने दी। तत्पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का उद्बोधन एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा अध्यक्षीय भाषण हुआ।

इस अवसर पर श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई (राष्ट्रीय महामंत्री-अ.भा.जैन युवा फैडरेशन) ने इस संगठन की आवश्यकता व उपयोगिता पर प्रकाश डाला एवं गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

हार्दिक बधाई !

नागपुर (महा.) निवासी डॉ. स्वर्णलता जैन धर्मपत्नी डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर को **'अतिचार व प्रायश्चित्त : स्वरूप व विश्लेषण'** विषय पर पीएच.डी. की उपाधि दिनांक 11 नवम्बर 2011 को डॉ. जैनेन्द्रजी जैन के निर्देशन में जैन विश्व भारती लाडनूँ से प्राप्त हुई।

एतदर्थ टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

नागपुर महिला फैडरेशन का चुनाव संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ अखिल भारतीय युवा फैडरेशन की महिला मण्डल शाखा का चुनाव कुन्दकुन्द कहान ट्रस्ट, विद्यानिकेतन समिति एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर कार्यकारिणी के 25 सदस्यों एवं 75 सामान्य सदस्यों को शपथ दिलाई गई। **अध्यक्ष** के रूप में प्रेमलता मोदी, **उपाध्यक्ष** डॉ. शकुन व शोभना मोदी, **मंत्री** डॉ. स्वर्णलता जैन, **उपमंत्री** सुनीता जैन व वन्दना जैनी, **कोषाध्यक्ष** श्वेता मोदी, **सांस्कृतिक मंत्री** प्राची जैन, दीपा जैन व अणिमा जैन, **सामाजिक मंत्री** डॉ. विमला जैन, **प्रचार मंत्री** नेहा मोदी, दीक्षा जैन, अनुभूति जैन, श्वेता मारवडकर व प्रीति जैन चुने गये।

वैराग्य समाचार

बुलन्दशहर (उ.प्र.) निवासी श्रीमती शकुन्तलादेवी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री शीतलप्रसादजी जैन का दिनांक 11 मई 2012 को देव-गुरु-धर्म की मंगल आराधनापूर्वक देहावसान हो गया।

आप अत्यंत धार्मिक महिला थीं। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित कैलाशचंदजी जैन अलीगढ की पुत्रवधु एवं श्री पवनजी जैन अलीगढ की भाभीजी थीं। आपकी स्मृति में संस्था को 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 28 मई 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127